दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ *वर्ष 57* ❑ *अंक-24* ❑ *दिल्ली* ❑ *अक्टूबर 2019 (द्वितीय)* ❑ *मूल्य : 2 रु.*

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, हरियाणा प्रदेश का दलित साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

सुमनाक्षर जी का 80वां जन्मदिन प्रथम दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया गया

• जरनैल सिंह रंगा

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, हरियाणा प्रदेश ने अपना 24वां प्रादेशिक सम्मेलन 6 अक्तूबर, 2019 को कुरूक्षेत्र के यूथ होस्टल में भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी के 80वें जन्मदिन पर प्रथम दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया। इस सम्मेलन में हरियाणा प्रदेश के अलावा 7 प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर यह नई शुरुआत की।

इस सम्मेलन में अकादमी के राष्ट्रीय डा. सोहनपाल सुमनाक्षर मुख्य अतिथि थे जिन्होंने भगवान बुद्ध तथा बाबा साहब डा. अम्बेडकर को माल्यार्पण कर व दीप जलाकर सम्मेलन का उद्घाटन किया। नेपाल दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष मा. ठाकुर चन्द गहतराज व हरियाणा के पूर्व ए.आई.जी. (जेल), डा. हरीश रंगा सम्मेलन में विशिष्ठ अतिथि थे। अकादमी के हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष प्रो. रमेश कुमार डीगवाल ने समारोह की अध्यक्षता की। हरियाणा प्रदेश के महासचिव डा. सुरेन्द्र कुमार सेलवाल ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

सम्मेलन में आये अतिथियों का अकादमी के प्रदेश उपाध्यक्ष श्री गुरूदयाल मोरथला ने स्वागत किया, वहीं प्रदेश महासचिव मा. जरनैल सिंह रंगा ने प्रथम दलित साहित्य दिवस के आयोजन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज 6 अक्तूबर हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का जन्म दिन है जिनके गत 35 सालों के प्रयास से दलित साहित्य देश–प्रदेश में स्थापित हो गया है। इसलिए 6 अक्तूबर से ही हम 'दलित साहित्य दिवस' मनाने की शुरुआत कर रहे हैं।

प्रथम दलित साहित्य दिवस समारोह का मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन करते हुए अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर ने कहा कि 6 अगस्त, 1984 को दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में कुछ दलित साहित्यकार, पत्रकार एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बाबू जगजीवन राम जी के सानिध्य में भारतीय दलित साहित्य अकादमी का गठन किया गया था। बाबूजी ने तब अकादमी की जिम्मेदारी मुझे सौंपते हुए दलित समाज के इतिहास की खोज और भविष्य में दलित साहित्य सृजन को आगे बढ़ाने के कार्य के लिए मार्गदर्शन प्रशस्त किया था। आज वही दलित साहित्य का कारवां अकादमी के माध्यम से देश में ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विदेशों तक पहुंच गया है। देश के विश्वविद्यालयों सहित विदेशों में भी दलित साहित्य पढ़ाया जा रहा है। एम.फिल व पीएच.डी. में दलित साहित्य पर शोध कार्य के विषय चयन शोधकर्ताओं का जिज्ञासा का केन्द्र बन चुका है। इस संघर्ष में अकादमी ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व साहित्यिक क्षेत्र में दलित साहित्य, दलित समाज के स्वाभिमान को जगाकर ब्राह्मणवाद के सामने एक ब्रह्मास्त्र के रूप में स्थापित हो चुका है।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि इस कारवां से जुड़ चुके दलित साहित्य के क्षेत्र में कलम के हजारों योद्धा यथार्थ व तर्क आधारित साहित्य के सृजनकर्ता बनकर लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में भागीदार बनकर लगातार गौरवमयी भविष्य का मार्ग तैयार कर रहे हैं। भारतीय दलित साहित्य अकादमी से जुड़कर सभी भाषाओं और देश–विदेश के सभी क्षेत्रों के बुद्धिजीवी, लेखक, कलाकार, समाजसेवी, अपने–अपने सामर्थ्य अनुसार संत शिरोमणि गुरू रविदास जी के लोकतांत्रिक समतावादी बेगमपुरा राष्ट्र के सपने को साकार करने में अपना योगदान दे रहे हैं। वे बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मानवतावादी दृष्टिकोण को मजबूत करने के लिए अपना भरपूर सहयोग कर रहे हैं।

सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे प्रो. रमेश कुमार डीगवाल ने राष्ट्रीय अध्यक्ष सोहनपाल सुमनाक्षर के 1984 से अब तक भारतीय दलित साहित्य अकादमी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान देने के लिए किये गये जीवन संघर्ष का विस्तार से प्रकाश

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

ऐसे हुआ दलित साहित्य का उद्‌भव

भोगे हुए जीवन पर आधारित दलित साहित्य दलितोत्थान साहित्य है जो सामाजिक विषमताओं को नकारता हुआ भारतीय संविधान प्रदत्त स्वतंत्रता, समता, न्याय, बन्धुता के अधिकारों का हामी है।

अब से कोई 40 वर्ष पूर्व वर्ण व्यवस्था, जातपांत, भेदभाव और सामाजिक विषमताओं पर आधारित ब्राह्मणवादी साहित्य का बोलबाला था। स्कूल, कालेज व विश्वविद्यालयों में जो पाठ्यक्रम या साहित्य पढ़ाया जाता था वह भी ब्राह्मणवादी रूढ़िवादी, भाग्य–भगवान, स्वर्ग–नरक, पाप–पुण्य, जन्म–मरण, पुनर्जन्म, धर्म–कर्म, ऊंच–नीच भेदभाव के विचारों से भरपूर रहता था जिसका सीधा असर विद्यार्थी के मन पर पड़ता था कि वह नीच कुल या जाति में क्यों पैदा हुआ है और उसका दूसरा सहपाठी उच्च कुल या सर्वोच्च जाति ब्राह्मण में क्यों पैदा हुआ? इसलिए उसे पढ़ाया जाता था कि वह दास या गुलाम रहते हुए अपने स्वामी की मन लगाकर सेवा करे, यही उसका धर्म है, और उच्च वर्ण का उसका मालिक उसके साथ कितना ही उत्पीड़न करे, जुल्म ढाये, अपमान करे, उसे सहना ही उसका धर्म है। यही धर्मशास्त्रों में लिखा है, जिसका पालन करना जरूरी है क्योंकि वेद और धर्मशास्त्र भगवान द्वारा रचित हैं।

जिन धर्मशास्त्रों को भगवान रचित प्रचारित किया गया था उनमें स्त्री व शूद्रों की शिक्षा का प्रारम्भ से ही निषेध था यानी उनके पढ़–लिखकर विद्या ग्रहण करने पर धार्मिक पाबन्दी थी–'स्त्रीशूद्रो नाधीयताम्।' इस कारण देश की आजादी से पूर्व शूद्र जाति के बाल–बालिकाओं को स्कूल में प्रवेश मिलना आसान नहीं था, और अगर किसी ने स्कूल में पढ़ने की हठधर्मी की तो उसे तरह–तरह के अपमानों–शारीरिक व मानसिक प्रताड़नाओं से गुजरना पड़ता था। इससे लाखों में से कोई एक अपनी पढ़ाई पूरी कर पाता था। पर देश की आजादी के बाद दलितों के लिए सभी स्कूल–कालेजों में शिक्षा के द्वार खुल गये।

इसका परिणाम यह निकला कि आजादी के 10–15 साल के अन्दर ही दलितों की एक शिक्षित पीढ़ी खड़ी हो गई जो बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समतावादी विचारों से प्रभावित थी और ब्राह्मणवादी रुढ़िवाद की सख्त विरोधी थी। बाबा साहब डा. अम्बेडकर निर्मित भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त आरक्षण की सुविधा के सहारे वे सत्ता व शासन में भी काबिज हो गये। अब शिक्षण संस्थानों व सरकारी नौकरियों में उनके आरक्षित पद होने के कारण जहां उनका शिक्षा का स्तर बढ़ा, वहीं सरकारी नौकरियों में जाकर वे आत्मनिर्भर हो गये और उनका स्वतंत्र चिन्तन हो गया।

दलितों की शिक्षित पीढ़ी ने अब समतावादी साहित्य पर विचार मन्थन शुरू किया। भगवान बुद्ध एवं गुरु रविदास, सद्‌गुरु कबीर आदि सन्तों के मानवतावादी साहित्य ने उन्हें ब्राह्मणवादी विषमतामूलक साहित्य की पोल खोलते हुए वर्ण व्यवस्था, जातिभेद और धर्म के ढकोसले को समझने की शक्ति दी। ब्राह्मणवाद के खिलाफ किए महात्मा जोतिबा फुले, स्वामी अछूतानन्द 'हरिहर' और बाबा साहब डा. अम्बेडकर के संघर्ष ने उन्हें अपने मानवीय अधिकारों को जानने और फिर उन्हें हासिल करने के लिए मार्ग प्रशस्त किया। और इसी विचार मन्थन से पैदा हुआ एक नया विचार–क्यों नहीं असमानतावादी ब्राह्मणवादी साहित्य की जगह हमारा अपना

(शेष पृष्ठ 2 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्‌घोष	डा. सुमनाक्षर	80/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/–
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/–
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/–

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

सम्पादकीय का शेष....ऐसे हुआ दलित साहित्य का उद्‌भव

समतावादी दलित साहित्य हो, क्यों नहीं ब्राह्मणवादी झूठे इतिहास की जगह हमारा अपना सच्चा दलित इतिहास हो, क्यों नहीं ब्राह्मणवादी अन्धविश्वास, रुढ़िवाद और ढोंग पर आधारित हिन्दू धर्म की जगह हमारा अपना सच्चा दलित धर्म हो।

फिर काफी विचार विमर्श के बाद इस विषय पर चर्चा के लिए एक बैठक सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा. श्यामसिंह 'शशि', महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार के मुख्यालय में बाबा साहब डा. बी.आर. अम्बेडकर के जन्म दिवस पर 14 अप्रैल, 1984 को हुई। इस मीटिंग में चौ. इन्द्राज सिंह, उप निदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, डा. नवल वियोगी, डा. परमानन्द पांचाल, श्री सुन्दरलाल सागर एडवोकेट, श्री मेहर सिंह भूषण, श्री प्रेम चन्द आर्य, डा. सुखबीर सिंह, श्री दयानन्द व्यास ने भाग लिया। इस मीटिंग में गहन विचार–विमर्श हुआ कि दलित इस देश के मूल निवासी हैं, उनका अपना गौरवमयी समतावादी साहित्य था, गौरवमयी इतिहास था, वे उत्कृष्ट कलाकार और शिल्पी थे। विदेशी आक्रमणकर्त्ता आर्यों ने बाहर से आकर उनके मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, लोथल, कालीबंगा, पीलीबंगा, धोलवीरा आदि सुसज्जित व सर्वसुविधा सम्पन्न नगरों को उजाड़ दिया और सिन्धु घाटी सभ्यता को नष्ट कर उन पर अपना कब्जा जमा लिया। उन्होंने हमारे साहित्य व इतिहास को जला डाला, हमारी कला व शिल्प को मलियामेट कर दिया। इसलिए अब हमें अपने साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिए एक संस्था का निर्माण करना होगा। काफी विचार विमर्श के बाद सर्वसम्मति से तय हुआ कि 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' के नाम से साहित्यिक संस्था गठित की जाए, जिसके अन्तर्गत दलित साहित्य, दलित इतिहास, दलित कला–संस्कृति पर लेखन कार्य किया जाए और फिर उसे देश के हर दलित जन तक प्रचारित किया जाए ताकि वह ब्राह्मणवाद के भ्रमजाल से छूटकर अपने व अपने पूर्वजों के गौरवमयी इतिहास से अवगत हो सके। इस तरह बाबा साहब डा. अम्बेडकर के जन्म दिवस 14 अप्रैल, 1984 को 'भारतीय दलित साहित्य अकादमी' का जन्म हुआ और उसके गठन, पंजीयन व उसकी विधिवत स्थापना का कार्य सर्वसम्मति से मुझे (डा. सुमनाक्षर को) सौंपा गया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के नामकरण व गठन के बाद हमने पूर्व उप–प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम जी से भेंट की और उन्हें अकादमी के गठन, उसके उद्देश्य और संचालन के विषय में जानकारी देते हुए उनसे अकादमी के विधिवत उद्‌घाटन की प्रार्थना की। बाबूजी ने अकादमी के गठन पर हर्ष व्यक्त करते हुए अकादमी के उद्‌घाटन करने की स्वीकृति दे दी।

6 अगस्त, 1985 को नई दिल्ली के कान्स्टीच्यूशन क्लब में प्रथम दलित साहित्यकार सम्मेलन डा. सोहनपाल सुमनाक्षर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। भू.पू. उप–प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम सम्मेलन में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने भारतीय दलित साहित्य अकादमी की स्थापना का विधिवत उद्‌घाटन करते हुए अपने उद्‌बोधन में कहा कि अकादमी की स्थापना एक अत्यावश्यक व अनिवार्य कार्य था। डा. सुमनाक्षर ने अकादमी की हर राज्य में शाखा गठित करके एक महान ऐतिहासिक कार्य किया है। इसके अन्तर्गत अब दलित साहित्य की रचना हो सकेगी, अपना प्राचीन गौरवमयी इतिहास की खोज हो सकेगी जो दलितों का इतिहास वेद–शास्त्रों में बिखरा पड़ा है। सिन्धु घाटी की खंडित हुई सभ्यता में अब दलित साहित्यकार अपनी कला–शिल्प व संस्कृति को खोज निकालेंगे जो आर्यों के आक्रमण के बाद यहां पड़ी है।

बाबूजी ने कहा कि दलित ही इस देश के मूल निवासी हैं जिन्हें आर्यों ने पराजित कर गुलाम बना दिया और उनके सभी अधिकार छीन लिए। दलित साहित्यकारों को दलित साहित्य के माध्यम से उनमें जन चेतना जाग्रत करनी है और उन्हें उनके पूर्वजों के गौरवमयी इतिहास से अवगत कराना है जिसे जानकर वे गर्व व स्वाभिमान से अपना सिर ऊंचा करके चल सकें। मुझे आशा है कि डा. सुमनाक्षर इस अकादमी के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में इस दलित साहित्य कारवां को आगे बढ़ाते हुए हर दलित के घर तक इसकी रोशनी पहुंचायेंगे ताकि वे सजग होकर अपने खोये हुए अधिकारों को पुनः हासिल कर सकें। बाबूजी ने इस अवसर पर डा. सुमनाक्षर के प्रथम कविता, संग्रह–'अन्धा समाज–बहरे लोग' पुस्तक का लोकार्पण करते हुए इसे दलित साहित्य की पहली रचना का खिताब दिया। बाबूजी के आह्वान से प्रेरित हो डा. नवल वियोगी ने 'सिन्धु घाटी की सभ्यता के सृजक–शूद्र व वणिक' ग्रन्थ लिखा जो दलितों के स्वर्ण युग का दस्तावेज है।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी 2009 में अपनी रजत जयन्ती मनाकर अब 35वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। अकादमी की देश के 35 प्रदेश शाखायें जिला, तहसील व ब्लाक स्तर तक फैली हैं। देश से बाहर आठ देशों में भी अकादमी की शाखायें हैं। अकादमी अब तक दो विश्व दलित साहित्यकार सम्मेलन, 34 राष्ट्रीय सम्मेलन, 800 प्रादेशिक, 20 हजार जिला सम्मेलन में विभिन्न दलितोत्थान कार्य आयोजित कर चुके हैं। देश–विदेश में एक लाख से ज्यादा दलित साहित्यकार, लेखक, पत्रकार, कलाकार, समाजसेवी अकादमी से जुड़कर दलित साहित्य के कारवां को आगे बढ़ा रहे हैं।

आज दलित साहित्य की देश–विदेश में धूम है। विश्वविद्यालयों में दलित साहित्य पाठ्यक्रम में पढ़ाया जा रहा है, दलित साहित्य पर शोध हो रहा है, एम.फिल, पी.एच.डी. की डिग्रियां दी जा रही हैं। सभी भाषा में लिखा दलित साहित्य पुस्तकालयों के सुशोभित हो रहा है। दलित साहित्य ने साहित्य, कला, शिल्प, संस्कृति के अर्थ ही बदल दिये हैं। उसने विश्व को एक नया इतिहास, एक नया धर्म व मानवता की नई परिभाषा दी है। जो लोग पहले 'दलित साहित्य' के

अम्बेडकर महान

अम्बेडकर महान थे अम्बेडकर महान,
भारत का ऐसा बनाया है संविधान।
पसमान्दा जातियों की बढ़ाई जिसने शान,
क्या–क्या मैं खूबियां करूं उनकी यहां बयान।
अम्बेडकर पे फखर है हिन्दुस्तान को,
भूलो न तुम भी याद करो उस महान को।
अम्बेडकर ने की है गरीबों की रहबरी,
पसमान्दा जातियों को दिलाई है नौकरी।
वो नौकरी के जिससे मिली उनकी बरतरी,
हर सिम्त बज रही है मुसर्रत की बन्सरी।
संविधान के बल पर जनतंत्र है टिका हुआ,
अम्बेडकर के संविधान ने जादू सा कर दिया।
अम्बेडकर ने सबको दिया है यही प्यार,
रह न जाये कोई भी विद्या से तिशनाकाम।
भारत में हो सभी की पढ़ाई का इंतजाम,
गाफिल रहे न विद्या से भारत के खासोयाम।
अम्बेडकर को करते रहो याद सुबहा–शाम,
ऊंचा करेगा देश को अम्बेडकर का नाम।
अम्बेडकर ने तुमको दिखाई है जो डगर,
चलते रहो सदा उस पर आंख मीच कर।
सब हल्ला बोलते रहो यारों इधर–उधर,
दुश्मन से अपने मिलके लड़ो हर महाज पर।
वो देखों कामयाबी कदम चूमने को है।
सत्ता का रूख तुम्हारी तरफ घूमने को है।
दोस्त तुम भी याद रखो उस महान को,
आईना दे गया है जो हिन्दुस्तान को।
इंसानियत का पाठ पढ़ाया जहान को,
दुनियां में बढ़ाया है भारत की शान को।
न हिन्दू थे, न मुसलमान थे बाबा,
दरअसल दलितों के भगवान थे बाबा। •

– बलराम प्रसाद शास्त्री एवं रिहान अहमद

बुद्ध ने कहा था–

- यदि आपको कोई फूल पसंद है तो आप उसे तोड़ लेते हैं, लेकिन यदि आप किसी फूल को प्यार करते हैं, तो आप उसे रोज पानी देंगे।
- हम जो कुछ भी हैं वो हमने आज तक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है। यदि कोई व्यक्ति शुद्ध विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोड़ती।
- हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है जो शान्ति लाये।
- सभी बुरे कार्य मन के कारण उत्पन्न होते हैं, अगर मन परिवर्तित हो जाये तो क्या अनैतिक कार्य रह सकते हैं?
- अतीत पर ध्यान मत दो, भविष्य के बारे में मत सोचो, अपने मन को वर्तमान क्षण पर केन्द्रित करो।
- स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है। वफादारी सबसे बड़ा सम्बन्ध है।
- एक जग बूंद बूंद करके भरता है।
- आपके पास जो कुछ भी है उसे बढ़ा–चढ़ा कर मत बताइए और न ही दूसरों से ईर्ष्या कीजिये। जो दूसरों से ईर्ष्या करता है, उसे मन की शांति नहीं मिलती।
- चाहे आप जितने पवित्र शब्द पढ़ लें या बोल लें, वो आपका क्या भला करेंगे, जब आप उन्हें उपयोग में नहीं लाते।
- सत्य के मार्ग पर चलते हुए कोई दो गलतियों कर सकता है पूरा रास्ता ना तय करना और उसकी शुरुआत ही ना करना।
- मैं तुम्हें रास्ता दिखा सकता हूं, लेकिन उस रास्ते पर चलना या चलने है, यह तय करना तुम्हारा काम हैं।
- मैं कभी नहीं देखता कि क्या किया जा चुका है, मैं हमेशा देखता हूं कि क्या किया जाना बाकी है।
- जिसने स्वयं को वश में कर लिया है, संसार की कोई शक्ति उसकी विजय को पराजय में नहीं बदल सकती।
- यह संसार अनित्य है, परिवर्तनशील है, क्षणभंगुर है। जिस व्यक्ति की यह समझ में आ गया कि विषयों में रस नहीं है। वह इन्द्रिय संयमी होगा और जो संतुलित भोजन करेगा वह सुख से रहेगा और साधना में आगे बढ़ेगा।

– गुलाब चन्द बारासा

नाम से मुंह मोड़ते थे, वे आज उससे जुड़कर अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। डा. सुमनाक्षर ने दलित साहित्य का जो सपना देखा था वह तो साकार हो गया, पर उसे अभी हर जन के घर तक पहुंचाकर जन–साहित्य बनाने के लिए अग्रसर होना होगा जिससे कि यह आने वाली हजारों पीढ़ियों तक शाश्वत रहे। इसके लिए जरूरी है कि सभी दलित साहित्यकार अकादमी के बैनर तले संकल्पबद्ध हो निस्वार्थ भाव से मिशनरी के तौर पर कार्य करें। इससे दलित साहित्य के मूल लक्ष्य को हम प्राप्त कर सकेंगे और इसे मानवीयता पर आधारित विश्व साहित्य बनाया जा सकेगा।

हर्ष और गर्व की बात है कि भारतीय दलित साहित्य अकादमी, हरियाणा प्रदेश ने ६ अक्तूबर, २०१६ को ऐतिहासिक व धार्मिक नगरी कुरूक्षेत्र में २४वां प्रादेशिक सम्मेलन प्रथम दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया और राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को उनके ८०वें जन्मदिन (६ अक्तूबर) पर 'दलित साहित्य शिखर सम्मान' से अलंकृत करते हुए उनके द्वारा स्थापित दलित साहित्य को विश्व व्यापी बनाने के लिए उनके शतायु होने की कामना की। क्योंकि आज दलित साहित्य सुमनाक्षर का परिवार पर्यायवाची हो गया है। ●

गरीबी और सवाल

• रवि शंकर

देश में गरीबी मिटाने पर जितना धन खर्च हुआ है, वह कम नहीं है। केंद्र सरकार के हर बजट का बड़ा भाग आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए आवंटित रहता है, किंतु इसके अपेक्षित परिणाम देखने को नहीं मिलते। ऐसा लगता है कि या तो प्रयासों में कहीं कमी है या फिर प्रतिबद्धता नहीं है, या लक्ष्यों की दिशा ही गलत है।

गरीबी एक वैश्विक समस्या है। दुनिया के ज्यादातर देश खासतौर से अफ्रीकी, एशियाई और लातिन अमेरिकी देश इससे जूझ रहे हैं। गरीबी का मतलब है गरीबी रेखा से नीचे जीवन जीना। किसी भी स्वतंत्र देश के लिए गरीबी एक बहुत शर्मनाक स्थिति है। ऐसे में भारत ने अपने लोगों को गरीबी के दलदल से निकालने की दिशा में लंबी छलांग लगाई है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपो)की ओर से जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में वर्ष 2006 से 2016 के बीच सत्ताईस करोड़ से ज्यादा लोगों को गरीबी से बाहर निकला गया। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2005-06 में भारत के करीब चौंसठ करोड़ यानी पचपन फीसद लोग गरीबी में जी रहे थे। साल 2015-16 में यह संख्या सैंतीस करोड़ पर आ गई। इस प्रकार भारत ने बहु आयामी यानी विभिन्न स्तरों और दस मानकों में पिछड़े लोगों को गरीबी से बाहर निकालने में उल्लेखनीय प्रगति की है।

यूएनडीपी की इस रिपोर्ट में इस बात का खुलासा किया गया है कि गरीबी काम करने के दिशा में पहल करने वाले देशों में दुनियाभर में भारत समेत दक्षिण एशियाई देश सबसे आगे हैं। यह एक आशाजनक संकेत है कि गरीबी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई जीती जा सकती है। यूएनडीपनी ने गरीबी और मानव विकास पहल (ओपीएचआई) का जो सूचकांक तैयार किया है, उसमें गौर करने वाली बात यह है कि गरीबी के दायरे से बाहर होने वालों में मुस्लिम, दलित और अनुसूचित जाति वर्ग के लोगों की संख्या काफी ज्यादा रही। पिछले एक दशक में भारत में समाज के सबसे गरीब तबके की स्थिति में सुधार आया है। खास बात यह है कि भारत में भी गरीबी के उत्थान में सबसे तेज रफ्तार झारखंड की रही है।

हाल में एक अमेरिकी शोध संस्था–ब्रूकिंग्स की ओर से भारत में गरीबी को लेकर जारी आंकड़े सरकार को सुकून देने वाले थे। रिपोर्ट में दावा किया गया था कि पिछले कुछ साल में भारत में गरीबों की संख्या बेहद तेजी से घटी है। सबसे अच्छी बात यह है कि भारत के ऊपर से सबसे ज्यादा गरीब देश होने का ठप्पा भी खत्म हो गया है। देश में हर मिनट चवालीस लोग गरीबी रेखा के ऊपर आ रहे हैं। यह दुनिया में गरीबी घटने की सबसे तेज दर है। रिपोर्ट के अनुसार देश में 2022 तक तीन फीसद से कम लोग ही गरीबी रेखा के नीचे होंगे। वहीं 2030 तक बेहद गरीबी मे जीने वाले लोगों की संख्या देश में नहीं के बराबर रहेगी।

लेकिन विश्व बैंक इससे अलग सोचता है। उसका मानना है कि अभी भारत में दुनिया की एक तिहाई गरीब आबादी रहती है। इसमें से 32.7 फीसद आबादी ऐसी है, जो सवा डॉलर (सौ रुपए से भी कम) से कम में गुजारा कर रही है। जबकि 68.7 फीसद आबादी ऐसी है, जिसे दो डॉलर (डेढ़ सौ रुपए लगभग) रोजाना से कम में गुजारा करना पड़ रहा है। लेकिन वर्तमान में भारत में गरीबी के मापदंड ही सवालों के घेरे में हैं। हमारे यहां गरीबी की एक नहीं, कई परिभाषाएं हैं। तेंदुलकर समिति के मानक के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में सत्ताईस रुपए और शहरी क्षेत्रों में तैंतीस रुपए प्रतिदिन खर्च करने वालों को गरीबी रेखा से ऊपर रखा गया और इस मानक के अनुसार गरीबी रेखा आबादी में बाईस फीसद की गिरावट दर्ज की गईं। यह आकलन काफी विवादास्पद रहा था। बाद में रंगराजन समिति ने इस सीमा को बढ़ा दिया, जिसमें ग्रामीण इलाकों में बत्तीस रुपए और शहरी इलाकों में सैंतालीस रुपए प्रतिदिन खर्च करने वालों को गरीबी रेखा से बाहर रखा गया और गरीबी में तीस फीसद गिरावट की बात कही गई। नीति आयोग के ताजा अनुमान के मुताबिक शहरों में पैंसठ रुपए और ग्रामीण इलाकों में बाईस रुपए बयालीस पैंसे से ज्यादा रोजाना खर्च करने वाले लोग गरीब नहीं हैं। ऐसे में सवाल है कि क्या ये आंकड़े गरीबी की परिभाषा तय करने के लिए पर्याप्त हैं?

आजादी के सात दशक बाद भी भारत में गरीब और गरीबी पर लगातार अध्ययन और खुलासे हो रहे हैं। भारत को आज भी विकासशील देश की श्रेणी में रखा जाता है। अभी भी यहां गरीबी रेखा से नीचे बड़ी आबादी रहती है। भले हम संयुक्त राष्ट्र विकास इसमें योगदान है। लेकिन इन योजनाओं से किनी और किस तरह गरीबी दर में कमी आ रही है, यह दावा विवादों को ही जन्म दे रहा है। ऐसी योजनाओं के क्रियान्वयन और इनमें भ्रष्टाचार को सवाल उठते रहे है। एक तरफ तो विश्व की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था होने की आत्ममुग्धता तो दूसरी तरफ विश्व के एक तिहाई गरीबों को अपने दामन में समेटे रहने का कलंक।

भारत की यह विरोधाभासी छवि वाकई सोचने को बाध्य कर देती है। बुलेट ट्रेन का सपना संजोते देश ने दूसरे देशों के उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ने की क्षमता तो अर्जित कर ली, पर वह गरीबी के अभिशाप से मुक्त नहीं हो सका। देश में गरीबी मिटाने पर जितना धन खर्च हुआ है वह कम नहीं है। केंद्र सरकार के हर बजट का बड़ा भाग आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए आवंटित रहता है, किंतु इसके अपेक्षित परिणाम देखने को नहीं मिलते। ऐसा लगता है कि या तो प्रयासों में कहीं कमी है या फिर प्रतिबद्धता नहीं है, या लक्ष्यों की दिशा ही गलत है।

गरीबी वाकई बड़ा अभिशाप है जिसे हम सदियों से झेलते आ रहे है।

धम्म और सम्प्रदाय

• ओ.एल. लोखण्डे

बुद्धिजीवी वर्ग समाज की रीढ़ है। समाज को दिशा देने में इस वर्ग की भूमिका बहुत महत्व रखती है। बुद्धि विलास और वाणी विलास इनके दो प्रमुख शस्त्र है। वे चाहे तो सही को गलत और गलत को सही बताकर समाज की सोच और मानसिकता को चाहे जैसा मोड़ दे सकते हैं। यदि यह वर्ग पूर्वाग्रह या दुराग्रह से ग्रसित हो तो किसी घटना का सम्यक और सही–सही आकलन तो हो ही नहीं पाता बल्कि वातावरण विषाक्त होने में देर नहीं लगती। चलो इसे 'मिठाई' की उपमा द्वारा समझने का प्रयास करें। मिठाई का मूलभूत प्राकृतिक गुण क्या है? मिठास और केवल मिठास। इसका सामान्य प्राकृतिक स्रोत क्या है? गन्ने से प्राप्त शक्कर या गुड़। सार्वजनिक रूप में या सामाजिक जीवन में कोई रसगुल्ले या गुलाब जामुन के रूप में, कोई पेड़े या बर्फी के रूप में अपनी पसंद को नाम या पहचान देता है। कोई मीठी सेवई या पीला भात को, कोई खीर को और कोई मिठाई के रूप में केक या पेस्ट्री या चाकलेट पसंद करता है।

व्यक्तिगत पसंद परिवार की पसंद बन जाती है या परिवार पर थोप दी जाती है। यही आगे बढ़कर उस स्थान या क्षेत्र की पहचान बन जाती है अर्थात् मिठाई के बाह्य स्वरूप और स्वाद के आधार पर समूह बनाकर अपनी पहचान कायम कर लेते हैं। इतना ही नहीं, अपनी सामूहिक पसंद को दूसरे समूह की पसंद से अच्छा बताने के उन्माद में आपस में झगड़ने लगते हैं। वे इस बुनियादी सत्य से अचेत हो जाते हैं कि मिठाई की मिठास का मूलतत्व प्रकृति द्वारा प्रदत्त गन्ने से प्राप्त शक्कर या गुड़ का गुण धर्म है।

यह सब जगह (सार्वभौमिक), सबके लिए (सार्वजनिक) और सदैव (सार्वकालिक) मिठास ही रहेगा फिर चाहे वह विश्व के किसी भी देश में या किसी भी व्यक्ति द्वारा उगाया गया हो। यही सत्य है और यह सत्य ही धर्म है। इस तथ्य की सत्यता समझ में आते ही बल्कि अनुभव करके जान लेने पर यह ज्ञान स्पष्ट हो जायेगा कि सही और वास्तविक धर्म (धम्म), सार्वजनिन, सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। साथ ही यह असांप्रदायिक है। लेकिन वर्तमान स्थिति यह है कि स्थानीय भौगोलिक आधार पर अन्य आवश्यकताओं के अनुरूप अलग–अलग समूह और समाज के आचार व्यवहार को पंथ/संप्रदाय के बदले अलग–अलग धर्म के लेबल चिपका दिये गये हैं। सम्प्रदाय को धर्म का नाम देने से धर्म (धम्म) के मूलतत्व अर्थात् इसके सार्वजनिन, सार्वभौमिक और सार्वकालिक स्वरूप का ही अवमूल्यन हो गया। लोग भूल बैठे कि धर्म (धम्म) में परस्पर आदर, स्नेह, प्रेम, सद्भाव, करुणा और सहिष्णुता निहित है।

धम्म आपस में जोड़ता है तोड़ता नहीं। धम्म का प्रभाव सब पर एक जैसा होता है चाहे वह मनुष्य हो या पशु पक्षी, इस देश के वासी हों या उस देश के। जैसे आग का धर्म है जलना और जलाना, बर्फ का धर्म है शीलतता। आग में हाथ डालने पर आग उसे जलायेगी ही चाहे वह हाथ किसी हिन्दू का हो या मुसलमान का, ईसाई का हो या सिक्ख का या बौद्ध का या जैन का, अमेरिकन हो या रूसी, फ्रांसीसी हो या चीनी, जापानी हो या हिन्दुस्तानी। ऐसे तथ्यात्मक दृष्टिकोण से यह अधिक सार्थक होगा कि भारतीय संविधान में उल्लेखित 'धर्म निरपेक्ष' को बदलकर 'सम्प्रदाय निरपेक्ष' किया जाये।

कार्यक्रम की रिपोर्ट से खुश हो कसते हैं कि भारत को गरीब कम करने की दिशा में बड़ी कामयाबी मिली है लेकिन हम इस सच्चाई से भी इन्कार नहीं कर सकते कि अब भी दुनिया के सबसे ज्यादा गरीब भारत में रहते हैं। अब भी छत्तीस करोड़ से ज्यादा लोग किसी न किसी रूप में गरीबी झेल रहे हैं।

भारत में 1990 से 2017 के बीच सकल राष्ट्रीय प्रति व्यक्ति आय में 266.6 फीसदी का इजाफा हुआ है। कार्यक्षमता के आधार पर भारत की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय करीब 4.55 लाख रुपए पहुंच गई है जो पिछले साल से 23,470 रुपए अधिक है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के चार राज्यों–बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में गरीबों की संख्या सर्वाधिक है। गौर करने वाली बात यह है कि इन चारों राज्यों में पूरे भारत के आधे से ज्यादा गरीब रहते हैं जो करीब बीस करोड़ की आबादी है। स्पष्ट हैं, गरीबी न केवल भारत, बल्कि दुनिया के अन्य विकासशील व पिछड़े देशों के लिए भी अभिशाप बनी हुई है। इसीलिए अभी भी अपेक्षाकृत गरीबों की बेहतरी के लिए काफी कुछ किए जाने की जरूरत है।

देश में गरीबी की दर घटने को लेकर लोगों की यह धारणा कुछ हद तक सही हो सकती है कि केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का यह कैसे और कब तक दूर होगा, यह एक विचारणीय मुद्दा है। भले ही सरकारी और गैर सरकारी प्रयास हर स्तर पर किए जाते हैं ताकि कोई भी गरीब न रहे। लेकिन काम कठिन है। यदि आबादी के बोझ से हमसे भी ज्यादा दबा चीन गरीबी से उबर सकता है तो हम क्यों नहीं? इसे दुर्भाग्य ही कहें कि भारत में हर साल गरीबी उन्मूलन और खाद्य सहायता कार्यक्रमों पर अरबों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। फिर भी भारत की सवा सौ करोड़ की विशाल आबादी में एक चौथाई में भी ज्यादा लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। बेशक आज देश में अनाज की कोई कमी नहीं है, फिर भी गरीबी, भुखमरी से लोग मर रहे हैं। आखिर इसका जिम्मेदार कौन है? •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- और आजीवन 1000/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1, दिल्ली-9

हिमायती
4 / अक्टूबर (द्वितीय), 2019 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 अक्तूबर, 2019

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 13 अक्तूबर, 2019

पृष्ठ 1 का शेष....सुमनाक्षर जी का 80वां जन्मदिन प्रथम दलित साहित्य दिवस के रूप में मनाया गया

डालते हुए उन्हें जन्मदिन की बधाई दी। नेपाल दलित साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री ठाकुर चन्द गहतराज ने बाबा साहब डा. अम्बेडकर की प्रेरणा से दलितों के समता, स्वतंत्रता, बन्धुता और न्याय अधिकारों के लिए नेपाल में संचालित संघर्ष पर विस्तार से बताया। विशिष्ठ अतिथि डा. हरीश रंगा ने दलित समाज को नशा जैसी कुरीतियों से दूर रहने और अपने बच्चों को अधिक से अधिक शिक्षित करने का आह्वान किया।

सम्मेलन में जम्मू–कश्मीर, केरल, सिक्किम, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार प्रदेश से आये प्रतिनिधियों ने भी दलित साहित्य को विश्व स्तर पर स्थापित करने के लिए डा. सुमनाक्षर को उनके जन्मदिन की बधाई देते हुए उनके अद्वितीय कार्यों की सराहना की।

दलित साहित्य दिवस के शुभावसर पर डा. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा दलित राजनीति, दलित धर्म–संस्कृति, दलित साहित्य, दलित समाज सेवा पर लिखी चार पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। ये महत्वपूर्ण दलित दस्तावेज हैं–

1. वोट हमारा राज तुम्हारा, नहीं चलेगा
2. दलित साहित्य–ब्राह्मणवाद के खिलाफ ब्रह्मास्त्र
3. कह रविदास खलास चमारा
4. सामाजिक समता के अमर योद्धा–बाबा साहब और बाबूजी।

सम्मेलन में दलित साहित्य क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वालो को 'दलित साहित्यकार सम्मान–2019' से नवाजा गया। इनमें हरियाणा प्रदेश महासचिव डॉ सुरेन्द्र सेलवाल, राष्ट्रीय महासचिव प्रो. जय सुमनाक्षर, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी आत्मा राम उपाध्याय (राजस्थान), श्री टी. बाला कृष्णन (केरल), श्रीमती शांती सुनदास (सिक्किम), श्री गुरुदयाल शास्त्री (बिहार), श्री तीर्थ तोंगरिया, पंजाब प्रदेशाध्यक्ष को यह गौरवशाली सम्मान मिला। वहीं ''दलित साहित्य उन्नायक सम्मान–2019'' प्राप्त करने वालो में जम्मू कश्मीर से डॉ. विजय भगत, श्रीमती रानी सरदार (केरल), श्री राजमल राज (दिल्ली), श्री रूप राम बागी (उत्तर प्रदेश), श्री बाबू राम निर्मल, बारां (राजस्थान), एडवोकेट जयनारायण पूर्व पी.आर.ओ. (पुलिस विभाग) पेहवा, इंजीनियर रूपचंद मानसा (पंजाब), श्री आरिफ अली (जोधपुर), श्री रमेशचंद्र मुवाल (भिवानी) थे। हरियाणा प्रदेश दलित अकादमी द्वारा पहली बार विशेष सम्मान पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष स्वर्गीय मांगेराम मोरथला की स्मृति में स्थापित 'श्री मांगेराम मोरथला गौरव सम्मान–2019' में विशिष्ठ अतिथि नेपाली दलित साहित्य अकादमी, काठमांडू नेपाल को दिया गया। 'दलित साहित्यकार राज्य एक्सीलेंस अवार्ड–2019', श्री जरनैल सिंह रंगा को पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिया गया। 'दलित साहित्य विशेष सम्मान–2019' से हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष प्रो. रमेश डीगवाल, डॉ. हरीश रंगा, पूर्व ए.आई.जी. (जेल विभाग) हरियाणा, व कुरुक्षेत्र प्रेस क्लब के अध्यक्ष श्री बाबू राम तुषार, श्री रूपराम बागी को उनकी दलित साहित्य सेवा के लिए सम्मानित किया गया। सामाजिक कार्यों में योगदान के सन्दर्भ में श्री हवासिंह राठी (पंचकूला), श्री रघुबीर कसाना, प्रो. कृष्ण दहिया, डॉ. हरीश दहिया, श्री तिलकराज, पारुल जोइया, श्री श्याम लाल जटिया, डॉ. रत्नचन्द्र 'विषहर', डॉ. वेदपाल भाटिया, सर्वश्री ओमप्रकाश (हिसार), इस्लाम मलिक (मेरठ), धर्म सिंह रादौर, एडवोकेट सुनील कुमार, बलजीत सिंह चंदेल, बालकराम, बालकृष्ण भास्कर, लालबहादुर पासवान, भूपेन्द्र यादव, कु. साक्षी रंगा, सविता, सन्तोष, रविन्द्र, बलजीत फौजी, सत्यनारायण मानसा, राजेश, राजबाला आदि अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं व बुद्धिजीवियों को प्रमाण पत्र व स्मृति चिन्ह देकर प्रोत्साहित किया गया।

इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य अतिथि डा. सोहनपाल सुमनाक्षर को अकादमी के सर्वोच्च सम्मान–''दलित साहित्य शिखर सम्मान–2019'' तालियों की घड़घड़ाहट के बीच सम्मानित किया गया।

पारित प्रस्ताव

सम्मेलन में सर्वसम्मति से अनुसूचित जाति एंव शोषित समाज को सामाजिक न्याय व सुरक्षा प्रदान करने तथा उत्थान हेतु एक मांग पत्र पास कर सरकार से उचित कदम उठाने की मांग की गयी। मांग पत्र में हरियाणा विधानसभा में 20 प्रतिशत आरक्षण के आधार पर 90 सीटों में 18वीं सीट आरक्षित करना, सफाई कर्मचारियों को गैस चेम्बरों में मरने के लिए न छोड़ना व उन्हें तकनीकी उपकरण उपलब्ध करवाना तथा उनकी मृत्यु पर आश्रितों को 20 लाख का मुवाजा की व्यवस्था करना, सरकारी नौकरियों में प्रथम व द्वितीय श्रेणी में विशेष अभियान चलाकर ''बैकलॉग'' को कम से कम समय मे पूरा करना,राज्य स्तरीय रोस्टर कमेटी का गठन करना व रोषटर प्रणाली को दृढ़ता से लागू करना, प्राइवेट व आउटसोर्सिंग क्षेत्र में भी दलित पिछडों का आरक्षण लागू करना, समाज कल्याण कार्यालय खण्ड स्तर पर खोलना, किसानों की तर्ज पर खेतिहर मजदूरों व अन्य भूमिहीन लोगों को खुद का व्यवसाय के लिए 3 लाख तक का ऋण बिना गारण्टी व कम ब्याज में उपलब्ध करवाना, भूमिहीन मजदूरों को 5 लाख का ऋण बिना ब्याज व पंजाब व दिल्ली की तर्ज पर 500 यूनिट तक बिजली आधे रेट पर देना आदि की मांग की गई।

सभी प्रतिनिधियों की सम्मेलन में सहभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रीय गान–जन गण मन के साथ सम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। •

चांद पर आर्यभट्ट से लेकर डॉ. भाभा तक

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान–2 की कुछ तस्वीरें साझा कीं और उन पर लिखे कुछ नामों से पता चला कि भले ही भारत के महान वैज्ञानिकों की याद में चांद की उल्लेखनीय जगहों के नाम सदियों से रखे जा रहे हैं। हाल में चांद के सतह पर एक 'क्रेटर' (विशालकाय गड्ढ़े) का नाम 'मित्र' रखे जाने का पता चला, जो 70 के दशक के प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री और रेडियो विज्ञानी शिशिर कुमार मित्र हैं। खोज करने पर पता चला कि चंद्रमा पर और भी ऐसे क्रेटर हैं, जिनका नामकरण भारतीय वैज्ञानिकों के नाम से किया गया है। इनमें भाभा क्रेटर, साराभाई क्रेटर, सीवी रामन क्रेटर और जेसी बोस क्रेटर शामिल हैं। चंद्रमा के एक क्रेटर का नाम प्राचीन खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर भी है।

हाल में इसरो के द्वारा जारी तस्वीरों में 'मित्र क्रेटर' के अलावा सॉमरफील्ड, किकवुड, जैक्सन, माक, कोरालेव, प्लासकेट, रोझदेस्तवेस्की और हर्माइट नामक विशालकाय गड्ढ़ों की तस्वीरें हैं। दरअसल, चांद पर खोजी गई हजारों विशेषताओं के नाम विख्यात वैज्ञानिकों, अंतरिक्ष यात्रियों और भौतिक विज्ञानियों के नाम पर रखे जाते हैं।

चंद्रयान–2 की नवीनतम तस्वीरों में जो विभिन्न क्रेटर दिख रहे हैं, उनमें से एक को 'मित्र क्रेटर' बताया गया है। इसरो के मुताबिक, चंद्रयान–2 ने चंद्रमा के सतह की ये तस्वीरें 23 अगस्त को चंद्रयान–2 के टेरेन मैपिंग कैमरा–2 द्वारा करीब 4375 किलोमीटर की ऊंचाई से लीं। 1970 के दशक में इस क्रेटर का नाम वैज्ञानिक शिशिर कुमार मित्र के नाम पर रखा गया। वर्ष 1962 में पद्म भूषण से सम्मानित प्रोफेसर शिखिर कुमार मित्र ने आयनमंडल (वायुमंडल के ऊपरी क्षेत्र) और रेडियोफिजिक्स के क्षेत्र में भारत में होने वाले शुरुआती अनुसंधान कार्यों का नेतृत्व किया। वे भारत में रेडियो विज्ञान में स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान की शुरुआत करने वाले पहले व्यक्ति थे।

'मित्र क्रेटर' का व्यास 92 किलोमीटर है। हालांकि, इस क्रेटर की गहराई का पता अभी तक नहीं लगाया जा सका है। चांद की सतह पर किसी उल्कापिंड के गिरने, ज्वालामुखी फटने, भूगर्भ में विस्फोट या फिर अन्य किसी विस्फोटक ढंग से बनने वाले लगभग गोल आकार के विशाल गड्ढ़े 'क्रेटर' कहे जाते हैं।

क्रेटर कई प्रकार के होते हैं, जिनमें प्रहार क्रेटर, ज्वालामुखीय क्रेटर, धंसाव क्रेटर, विस्फोट क्रेटर, बिल क्रेटर और मार क्रेटर शामिल हैं। चंद्रमा के उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्र में चंद्रयान–२ के द्वारा मानचित्रण के दौरान कैद किया गया 'मित्र क्रेटर' एक प्रहार या 'इंपैक्ट क्रेटर' है। जब अत्यधिक रफ्तार से गिरता कोई छोटा पिंड किसी दूसरे बड़े पिंड की सतह से टकराता है तो प्रहार क्रेटर बनते हैं। ज्वालामुखी फटने से ज्वालामखी क्रेटर, जमीन धंसने से धंसाव क्रेटर, खौलते लावा में पानी मिलने से मार क्रेटर, जमीन के नीचे के खाली स्थान की छत के गिरने से बिल क्रेटर और जमीन के नीचे विस्फोट से मलबा बाहर निकलने पर विस्फोट क्रेटर बनते हैं। •

35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन 8–9 दिसम्बर, 2019 को दिल्ली में

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में द्विदिवसीय 35वां राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन पंचशील आश्रम, झड़ोदा गांव, (बुराड़ी बाई पास), निरंकारी समागम ग्राउंड के सामने, आउटर रिंग रोड, दिल्ली–84 में 8–9 दिसम्बर, 2019 को आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश के सभी राज्यों के, सभी भाषाओं के दलितोत्थान में जुटे दलित साहित्यकार, पत्रकार, लेखक, सम्पादक आदि भाग लेंगे जो दलितोत्थान विषयों पर विचार–विमर्श करेंगे। दलित नेताओं को भी इस सम्मेलन में आमत्रित किया गया है।

सम्मेलन में दलितोत्थान में कार्यरत दलित साहित्यकारों, दलित लेखकों, कलाकारों, पत्रकारों और समाजसेवियों को बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, महात्मा जोतिबा फुले, भगवान बुद्ध, वीरांगना सावित्रीबाई फुले आदि राष्ट्रीय अवार्डों से सम्मानित किया जायेगा। आप सम्मेलन में इन अवार्डों से सम्मानार्थ अपना 'बायोडाटा' अकादमी कार्यालय को भेज सकते हैं। इस अवसर पर प्रकाशित 'अकादमी–स्मारिका' के लिए आप अपनी रचना भी भेज सकते हैं।

सम्मेलन में प्रतिनिधि के रूप में आप शामिल होकर दलितोत्थान विषयों पर अपने विचार भी रख सकेंगे। इसके लिए आपको अपने विचार/ उद्‌बोधन/सुझावों को लिखित रूप में अग्रिम भेजना होगा। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी आप हमारे फोन/मोबाईल पर सम्पर्क करके ले सकते हैं।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी

डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर — *राष्ट्रीय अध्यक्ष* — मो. : 9810278936

कार्यालय — फोन: 011-27421449, 011-27421460

जय सुमनाक्षर — *राष्ट्रीय महासचिव* — मो. 9891989175

E-mail: jay.sumanakshar@gmail.com

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A–9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009